नवीं पनीरी
भाग - 3
Bhai Vir Singh Sahitya Sadan

नवीं पनीरी

बाल कथाएँ गुरु नानक देव

भाग तीसरा

भाई वीर सिंह साहित्य सदन
भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्किट
नई दिल्ली-110001

नवीं पनीरी
बाल कथाएँ गुरु नानक देव (भाग तीसरा)

प्रथम संस्करण, 2007
आधार : गुरु नानक चमत्कार -भाई वीर सिंह
साखीकार : डॉ. ज्ञानी भजन सिंह
अनुवाद : डॉ. गुरचरन सिंह
कलापक्ष : बोध राज
प्रकाशक : भाई वीर सिंह साहित्य सदन,
भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष 23363510
फैक्स 23744347
मुद्रक : सुंदर प्रिंटर्स
2477-79, नलवा स्ट्रीट, पहाड गंज
नई दिल्ली-110055
मूल्य : 55 रुपये

करतारपुर रावी नगर बसाया

गुरु नानक देव जी अपनी पहली उदासी के उपरांत अपने नगर, तलवन्डी राय भोई, ननकाना साहिब आ गए। कुछ दिन वहाँ रह कर फिर घर से चल पड़े। लाहौर से २०-२२ मील दूर रावी के किनारे एक बहुत सुन्दर और हरी भरी जगह पर एक पेड़ के नीचे डेरा जमाया। वहाँ पर बैठे सुबह शाम कीर्तन करते रहते। एक जाट औरत दो तीन दिन पति को खेतों में खाना देने जाते हुए उनका कीर्तन सुनती रहीं। आखिरकार उसने उनसे आ कर पूछा कि आपने पिछले तीन दिन से कुछ खाया नहीं, कहीं गए भी नहीं आग भी नहीं जलाई आप कौन हैं। गुरु जी ने उत्तर दिया कि हम भी आपकी तरह इन्सान हैं। जब खाने को कुछ मिलेगा तो खा लेंगे। वह औरत घर गई और दूध, दही, लस्सी, रोटी तैयार कर के ले आई और उन्हें खिला दी।
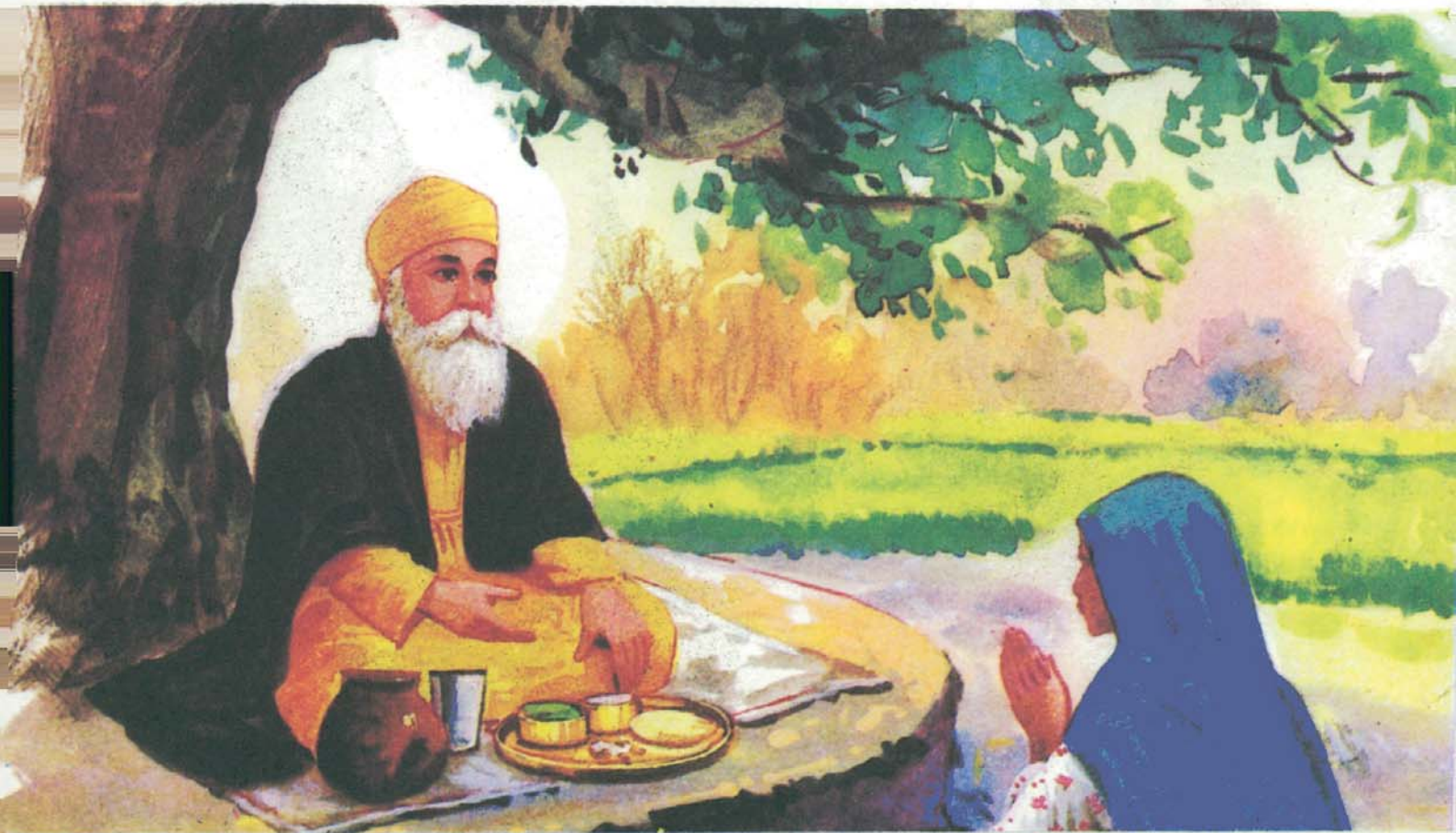
उस को बहुत खुशी हुई, संतोष भी हुआ और वह कीर्तन सुन कर प्रभु प्रेम में रमने लगी। उसका पति भी उनकी सेवा में आ गया। दूर-दूर तक गुरु नानक की चर्चा होने लगी और लोग उनके पास अपने दुखों के निवारण के लिए आने लगे। पति पत्नी दोनों ने एक दिन उनसे विनती की कि हम आपके लिए इस पेड़ के पास छत डाल देते है ताकि आप धूप,बारिश इत्यादि से बचे रहें। गुरु जी ने उन्हें आज्ञा दे दी। उस स्थान पर गुरु नानक व और लोगों के ठहरने के लिए घर बन गए।
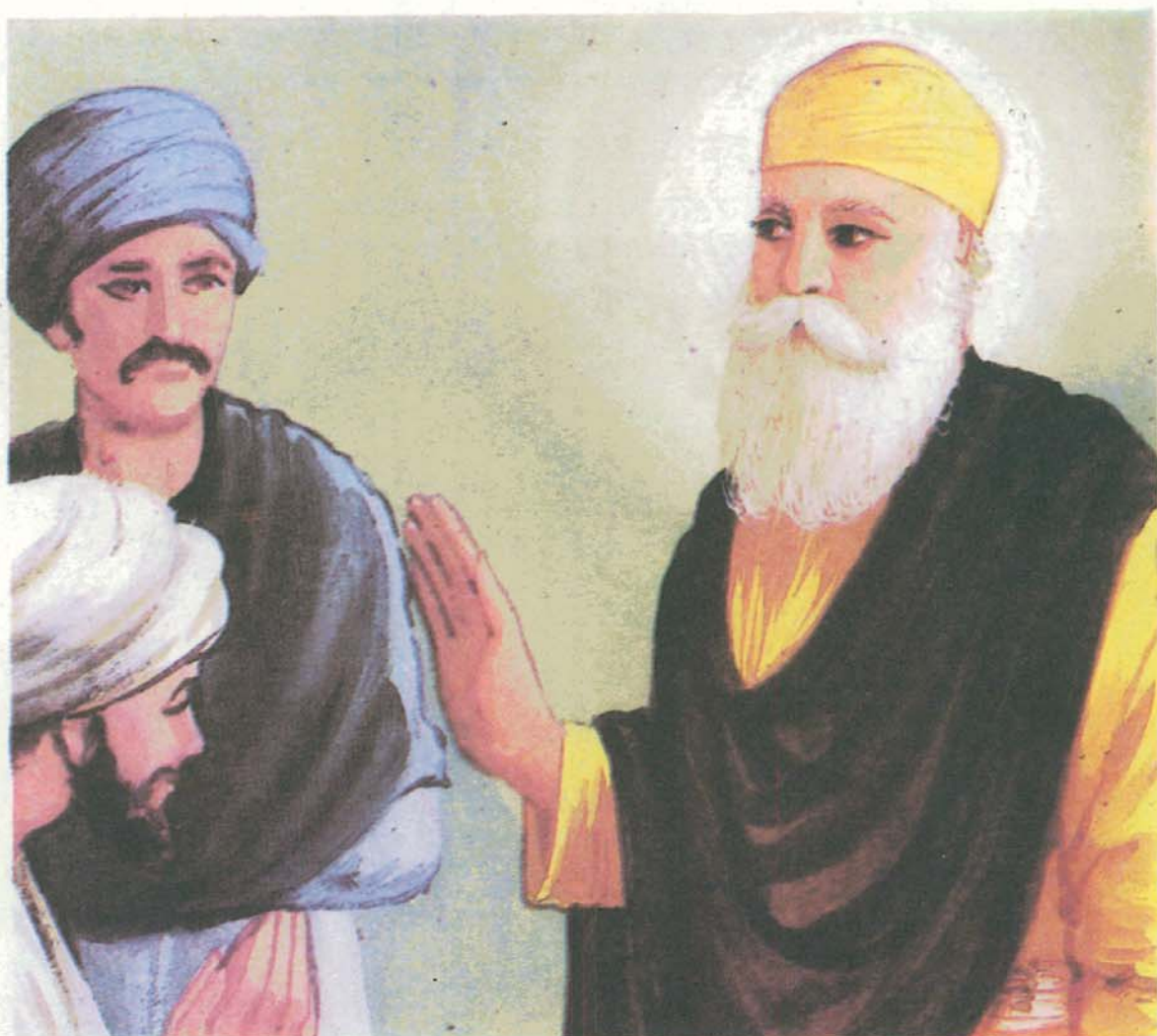
उस स्थान के पंडित, मौलवी और योगी परेशान होने लगे कि लोग उनके बजाए गुरु नानक के पास जाने लगे हैं। उन्होंने इलाके के हाकिम के पास जा कर शिकायत की कि नानक हमारे धर्म का विरोध करता है और उसने आपकी ज़मीन पर भी कब्ज़ा कर लिया है। कान का कच्चा करोड़ी चन्द क्रोधित हो गया और गुरु जी की और जाने के लिए तैयार हो गया परन्तु राह में घोड़े से गिर गया और जख्मी हो गया।

कुछ समय बाद फिर उनसे मिलने चला तो उनके पास पहुँच कर उसको दिखाई देना बन्द हो गया। आँखों के आगे अँधेरा छा गया। वह पीछे की और जाए तो दिखने लगे और गुरु जी की तरफ आए तो आँखों के आगे अँधेरा आ जाए।

दोदो और दोदा, पति पत्नी ने करोड़ी चन्द को समझाया कि गुरु नानक की और गलत नज़रों से देखने की ही यह सज़ा है। यह बात उसे समझ आ गई। वह ह्रदय परिवर्तन करके वहाँ आया, कीर्तन सुना और वचन सुन के निहाल हो गया और गुरु का सिक्ख बन गया। करोड़ी चन्द ने वह सारी ज़मीन ही गुरु जी के नाम कर दी और वहाँ पक्की इमारतें बनवा दी।

इस प्रकार करोड़ी चन्द की भेंट की हुई ज़मीन पर करतारपुर नगर बस गया।

इस नए आबाद हुए नगर का नाम गुरु जी ने आप ही करतारपुर रखा था। गुरु नानक देव जी के माता पिता और उनकी पत्नी व पुत्र भी वहीं आकर रहने लगे।

प्रभात को जपुजी साहिब का पाठ और आसा की वार का कीर्तन, साँझ में सोदर और आरती गाने का नियम गुरु नानक ने करतारपुर में ही प्रचलित किया था। खुले लंगर की प्रथा भी यहीं से शुरु हुई थी।

भाई बुद्ढा से भेंट
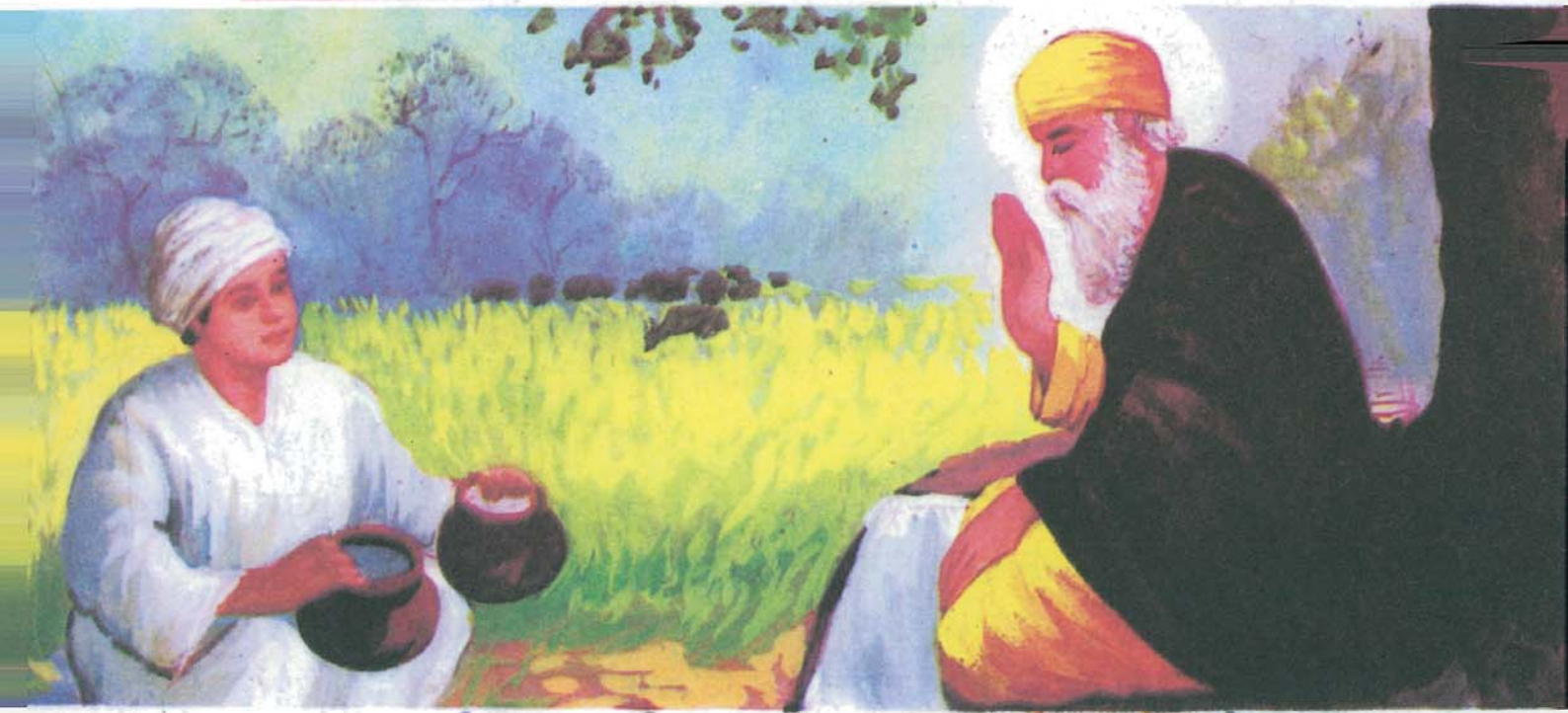
करतारपुर में गुरु साहिब आबादी से कुछ दूर एक पेड़ के नीचे बैठ कर कीर्तन कर रहे थे तो वहाँ एक बालक गाय भैंसों को चराता उस तरफ निकल आया। उसने कीर्तन सुना तो उसे अच्छा लगा। वह मवेशियों को छोड़ कीर्तन सुनने लगा। इस तरह दिन में कई बार हुआ बालक ने उन्हें ईश्वर का रुप और महापुरुष जान कर सेवा करने की सोची। कुछ ही दूरी पर एक कुआँ था। वहाँ से वह बालक दो कुजे ले आया। एक में उसने शीतल जल डाला ओर दूसरे में गाय का दूध और उन्हें गुरु जी के सामने रख दिया और नमस्कार कर के बैठ गया।

गुरु जी ने उससे पूछा "बालक तुम्हारा नाम क्या है" बच्चे ने एकदम जवाब दिया "जी मेरा नाम बूढ़ा है।" गुरु जी ने फिर पूछा। "बूढ़े तू क्या चाहता है।" जब बूढ़े ने अपने मन की अवस्था उन्हें बताई तो गुरु जी ने कहा "तू बालक बूढ़ा नहीं बुढा है" बस उस दिन से उनका नाम बुड्ढा हो गया।

इस पहली मुलाकात से ही बालक प्रभु के रंग में ऐसा रंग गया कि उसने अपनी सारी उम्र गुरु नानक के घर की सेवा में लगा दी। उसने अपना घर बार सब भुला दिया और वहीं करतारपुर में रहने लगा। अपने माता पिता और सगे संबंधियों से मिलने कभी-कभी जाता था।

यही बुढ्ढा सिक्खी जीवन और आर्दश के ऐसे शिखर पर पहुँच गया कि जब गुरु नानक देव जी ने गुरु गददी गुरु अंगद देव को दी तो तिलक लगाने की रस्म बाबा बुड्ढा जी ने ही निभाई। छठे गुरु हरिगोबिन्द साहिब तक तिलक इन्हों ने ही लगाया और दसवें गुरु गोबिन्द सिँह तक इनकी संतान ने यह सेवा की। जब १६०४ ई अमृतसर में हरिमन्दिर साहिब में गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश हुआ तो गुरु अर्जुन देव ने बाबा बुड्ढा को हरिमन्दिर साहिब का पहला ग्रन्थी नियुक्त किया।
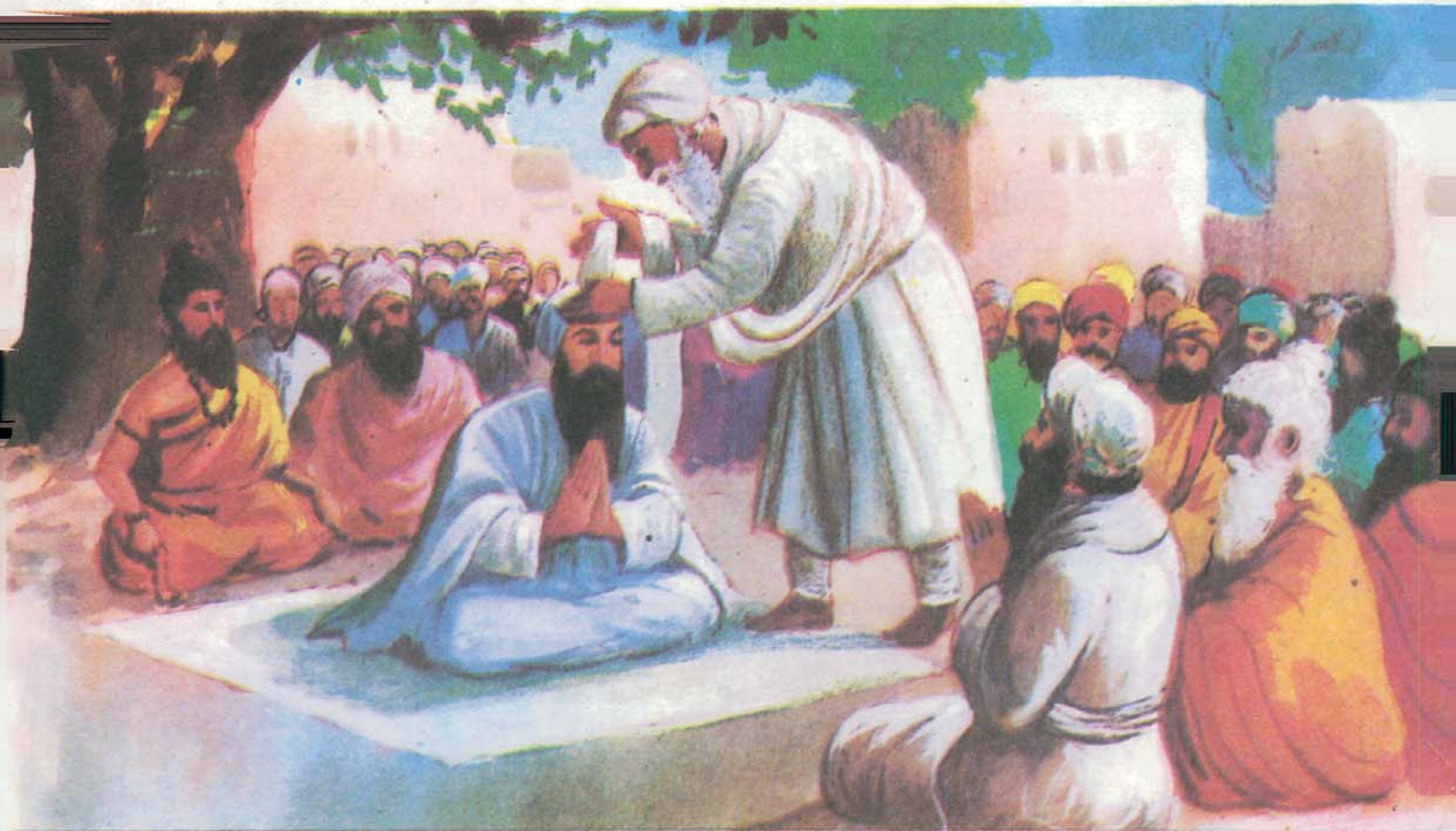
गुरु नानक सरसा में

दूसरी उदासी के समय दक्षिण की और जाते समय गुरु नानक का पहला पड़ाव सरसा में पड़ा। यहाँ गुरु जी ४ महीने और ११ दिन रहे। उस समय सरसा हिन्दु सन्तों, मुसलमान फकीरों और योगियों से भरा पड़ा था जो लोगों को जीवन का सही अर्थ बताने के स्थान पर उल्टे राह डाल रहे थे। गुरु नानक देव जी उन्हें समझाने के लिए ही आए थे और यहाँ रहने का यही मुख्य कारण था।

जब योगी, संतों, फकीरों ने सुना कि गुरु नानक आए हैं तो वह सब उनसे मिलने आए। मन में धारणा थी कि उन्हें बहस में हराकर यहाँ से भगा देंगे पर हुआ इसके विपरीत। गुरु जी ने लम्बे समय तक उनको समझाया और उनके भ्रम दूर किए। उनके साथ बैठकर ४० दिन तक एक दाना रोज़ खाकर दिन बिताए और साबित किया कि त्याग हठ, तप सब व्यर्थ है। उन्होंने साबित कर दिया कि नाम सिमरन ही शिरोमणी तप है और इसी में सारे सुख हैं।

इस स्थान पर अब एक सुन्दर गुरुद्वारा है।

कौडे राक्षस का उद्धार

गुरु नानक देव, मरदाना और एक सिक्ख काफी सफर के बाद धनासरी के जंगलों में पहुँचे जहाँ आदमखोर जंगलियों का वास था। इन में कौडा राक्षस सबसे ज्यादा प्रसिद्ध था जो कि दूर-दूर जा कर मनुष्यों को उठा लाता व एक बड़े तेल से भरे कड़ाहे में तल कर खा जाता।

जब गुरु नानक दो मनुष्यों के साथ वहाँ पहुँचे तो कौडा राक्षस ने मरदाने को अपनी गुफा में उठा ले गया। गुरु नानक भी जल्दी वहाँ पहुँचे। उन्होने अपनी दृष्टि जल रही आग व कड़ाहे की तरफ डाली। अरे यह क्या? कड़ाहे का तेल ठंडा हो गया और नीचे जल रही आग भी बुझ गई। कौडे राक्षस ने मरदाने को छोड़ा और गुरु नानक की और देखा और बस देखता ही रह गया। उसके अन्दर का राक्षस वहीं मर गया और एक नए मनुष्य का जन्म हुआ जिसने अपने किए हुए कर्मों का पश्चाताप किया।
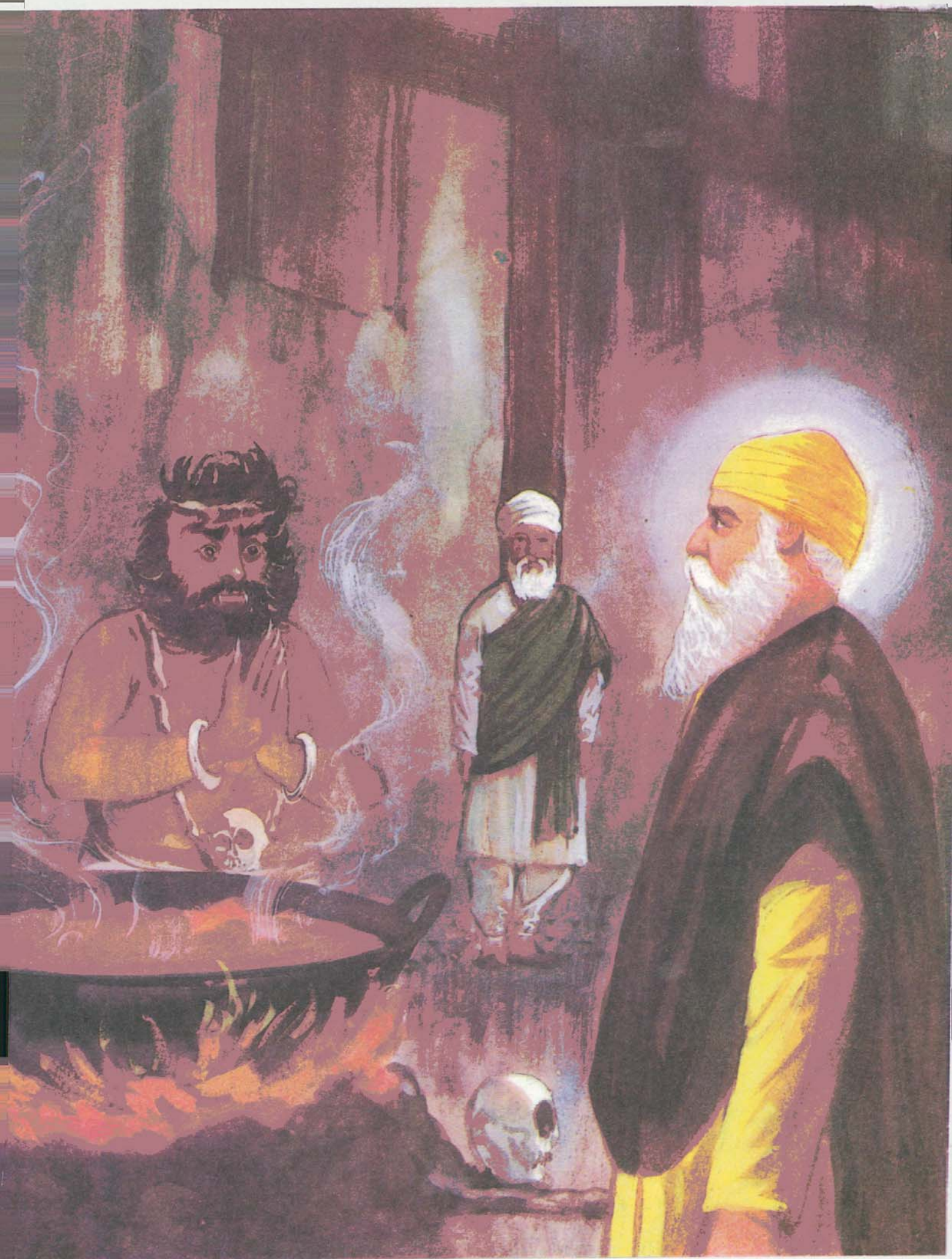
मछंदर नाथ के साथ गोष्ठी

गुरु जी जब मंगलाद्वीप जा रहे थे तो रास्ते में एक टापू पर उतरे। वहां योगी गोरखनाथ व उसके गुरु मछंदरनाथ बैठे थे। उन्होने गुरु जी का सत्कार किया। विचारों के आदान-प्रदान के दौरान मछंदरनाथ ने एक प्रश्न किया हे गुरु नानक! जब कोई जीवित इन्सान सागर में गिर जाए तो वह डूब जाता है किन्तु जब कोई मुर्दा उसमें डालें तो वह तैरता रहता है। हमें कोई एसा मार्ग बताओ कि यह सागर रुपी संसार पार करते हुए न तो हम डूबे और जिन्दा भी रहे।

गुरु जी बोले- हे योगीराज! जल में तैरना सीखो। पहले तैराक हाथ पैर के ज़ोर पर तैरना सीखता है। जब सफल तैराक हो जाए तो बिना यत्न तैरता है। जिस प्रकार मुर्दा बिना यत्न तैरता है वैसे ही तैराक भी पानी में जीवित रहता है परन्तु असल प्रश्न यह है कि हे योगीराज तैरना किसलिए है। मन के शौक के लिए, या शारीरिक कसरत के लिए। सदा किसी प्रयोजन के लिए तैरना चाहिए।

जब पूछा प्रयोजन क्या है? तो गुरु जी का जवाब था कि हमारा प्रयोजन प्यारे प्रभु के साथ प्रेम हैं और उसको प्राप्त करना है। यह हम इस सागर रुपी संसार को तैर कर ही कर सकते हैं डूब कर नहीं।
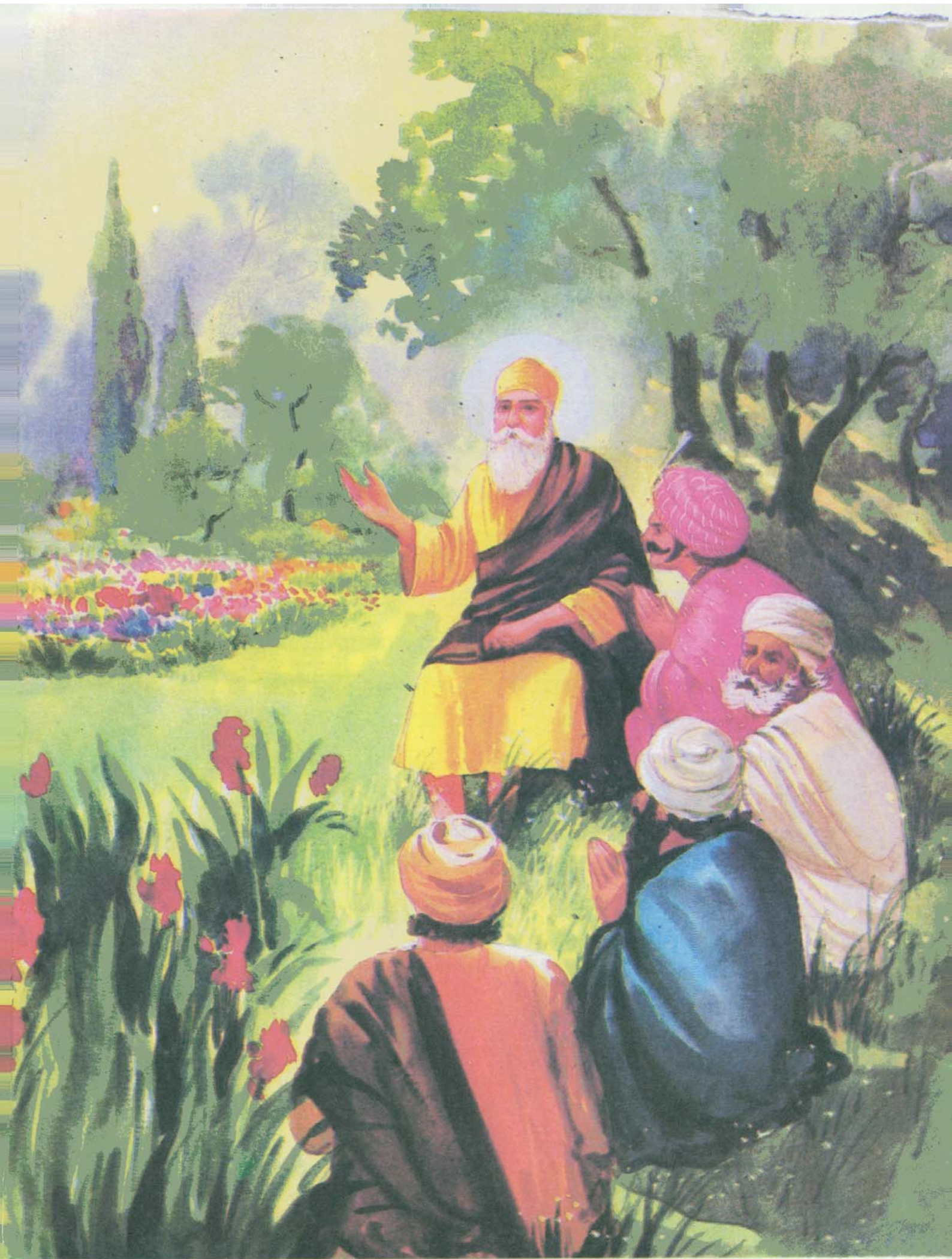
राजा शिवनाभ को निहाल किया

मंगलद्वीप टापू पर राजा शिवनाभ राज करते थे। गुरु नानक का एक श्रद्धालू मनसुख व्यापार के सिलसिले में इस टापू पर गया और सब को गुरु नानक की वाणी से निहाल किया। मनसुख राजा शिवनाभ से भी मिला और उन्हें गुरु नानक के विषय में बताया, उनकी वाणी भी सुनाई। राजा शिवनाभ भी बहुत प्रभावित हुआ और गुरु नानक का बिन मिले ही सेवक बन गया। उनसे ऐसा प्यार हुआ कि हर समय गुरु जी की याद में ही मग्न रहने लगा। उसके प्रेम से खिंचे गुरु नानक हज़ारों मील का सफर कर मंगलद्वीप पहुँचे और राजा शिवनाभ के बाग में जा कर ठहरे। बाग के सूखे पेड़ भी गुरु नानक की छाया में हरे होने लगे।

राजा शिवनाभ, उसकी रानी तथा सारे वज़ीर गुरु जी के दर्शन कर निहाल हुए। मन को सुख शांति प्राप्त हुई। राजा ने उन्हें महल में चलने को कहा। गुरु जी ने उनसे कहा कि धर्मसाल बनवाओ वहीं जाएँगे जहाँ हर कोई आ सके। धर्मसाल बनी और गुरु जी ने अपना डेरा वहाँ जमाया। लोग सुबह शाम वहाँ आते कीर्तन करते। राजा शिवनाभ ने तो वहीं अपनी धुनी रमा ली। गुरु जी ने यहाँ संगत कायम की और राजा शिवनाभ को उनका मुखिया बनाया। उनसे कहा कि प्रजा की भलाई के लिए शासन भी करो और लोगों को ईश्वर के साथ जोड़ने का काम भी।
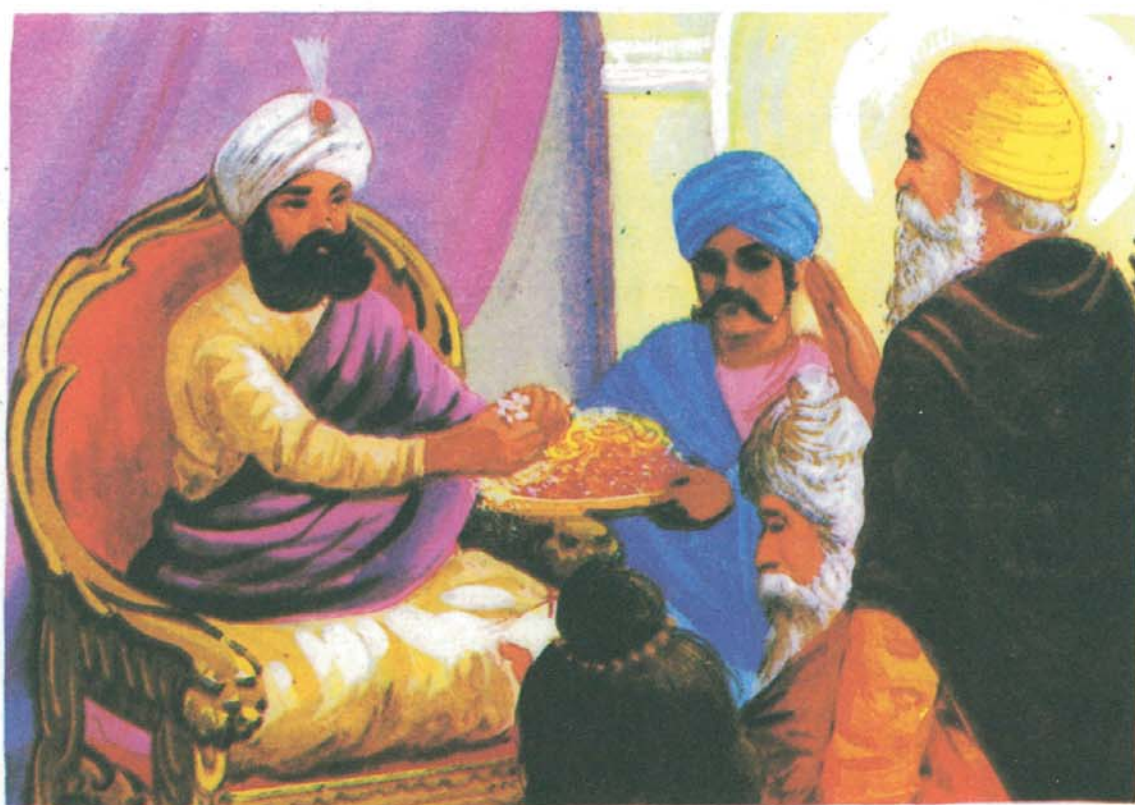
गुरु जी ने सबको समझाया कि साँसारिक कार्य करते हुए भी मनुष्य मानवता की सेवा कर सकता है और प्रभु कें नाम सिमरन के साथ मनुष्य की आत्मा परमात्मा के साथ जुड़ सकती है। राजा शिवनाभ को, जो राजपाट त्याग कर सन्यासी बनना चाहता था ज्ञान दिया कि वह 'संगत' का मुखी बनकर प्रभु प्रेम के सागर में गोते लगा सकता है और राजा होकर मानवता की सेवा कर के अपना जीवन सफल कर सकता है।

मंगलाद्वीप में राजा के साथ और बहुत से लोग भी सिक्ख बन गए। गुरु अर्जुन देव जी ने भाई भैड़े को मंगलाद्वीप भेजा और उसने आकर बताया कि राजा शिवनाभ का पोता वहाँ राज कर रहा है। उसी तरह संगत कायम है और सिक्ख फुलवारी खिली हुई है। कहते हैं कि गुरु जी ने "प्राण संगली" नामक रचना का यहीं उच्चारण किया था और भाई भैड़ा उसे लिवाने ही गए थे। यह भी जिक्र है कि उस समय जापा पट्टन बंदरगाह से जहाज़ या बेड़े ३ दिन में मंगलाद्वीप पहुँचते थे।

भ्रतृहरि योगी को जीवन ज्ञान

दक्षिण में गुरु नानक देव जी कजली वन पहुँचे जहाँ योगिओं का बहुत बड़ा आश्रम था और आसपास के सभी लोग वहाँ आते थे। गुरु जी ने आश्रम की और जाने वाले रास्ते पर एक पेड़ के नीचे अपना डेरा जमाया और कीर्तन शुरु कर दिया। आते जाते लोग कीर्तन और उपदेश सुनकर प्रभावित होने लगे। आश्रम का प्रधान था भ्रतृहरि योगी जिसके आगे सब झुकते थे और प्रणाम करते थे। उसने जब गुरु नानक के बारे में सुना तो उनसे मिलने आया। कीर्तन सुनकर उसका मन परिवर्तन हुआ उसका सिर अपने आप ही झुक गया और उसका सारा अभिमान जाता रहा।

गुरु नानक के साथ कई विषयों पर विचार विमर्श हुआ। योगी ने हर बात पर यह स्वीकार किया कि गुरमति की राह ही सही है। एक दिन गुरु जी उनके आश्रम में भी गए। वहाँ उन्होने देखा कि सब योगी नशे में धुत पड़े हैं। गुरु नानक ने उन्हें इस नकली नशे को त्यागने और नाम के असली नशे को अपनाने को कहा। भ्रतृहरि सिक्ख बन गया और वहाँ पर सिख संगतकायम की। वह तो गुरु जी के साथ ही जाना चाहता था परन्तु गुरु जी ने उसे वहीं रह कर लोगों की सेवा करने को कहा।

झोंपड़ी गिराकर कृपा की

गुरु नानक देव जब दक्षिण से पंजाब वापिस आ रहे थे तो रास्ते में एक नगर में पहुँचे। मूसलाधार बारिश हो रही थी। ठंडी हवा चल रही थी। गुरु जी और उनके दो साथियों को किसी ने पनाह न दी, किसी ने भी दरवाज़ा न खोला। गुरु जी नगर से बाहर निकल आए। बाहर एक झोंपड़ी देखी तो वहीं चले गए। यह झोंपड़ी एक गरीब मज़दूर की थी जो खेतों में बिजाई और कुटाई के समय काम कर अपना गुज़र-बसर करता था। उसने गुरु जी और उनके साथियों का आदर-सत्कार किया।

उस मजदूर ने उनके लिए बड़े प्यार से मक्की की रोटी बनाई और पहले से बने साग के साथ खाने को दी। वह कहने लगा "यह भोजन चाहे महापुरुषों के लायक नहीं है पर मेरे पास यही रुखा सूखा है।" गुरु जी उसका प्यार और सेवा भाव देख कर बहुत खुश हुए। तीनों ने बहुत प्यार से वह रोटी खाई।

जब सुबह सब उठे तो मज़दूर के पास जो कुछ था उनके आगे रख दिया और बड़ी श्रद्धा से माथा टेका। गुरु नानक ने उस से कहा "तुम्हारी झोंपड़ी अच्छी नहीं इसे गिरा दें?" मज़दूर ने उत्तर दिया "जैसी आपकी इच्छा" गुरु जी ने वह झोंपड़ी गिरा दी। सैदो और सीहाँ हैरान थे कि यह गुरु जी ने क्या कर दिया पर वे चुप रहे।

दो दिन सफर करने के बाद सैदो से रहा नहीं गया उसने गुरु जी से झोंपड़ी गिराने का कारण पूछा। गुरु जी ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया कि तुम खुद जा कर देख आओ। गुरु जी के आदेशानुसार जब सैदो वापिस उस झोंपड़ी वाली जगह गया तो उसने देखा कि वह कर्मी वहाँ एक बढ़िया मकान बनवा रहा है। पूछने पर उसने बताया कि उसने जब दुबारा झोंपड़ी बनाने के लिए नींव खोदनी शुरु की तो वहाँ उसे गड़ी हुई सोने की मोहरें प्राप्त हुई। उसी धन से वह यह मकान बनवा रहा है और गुरु नानक की याद में वहाँ पर एक गुरुद्वारे का निर्माण करेगा। और सारी उम्र यहाँ बैठ कर प्रभु के गुण गाएगा।
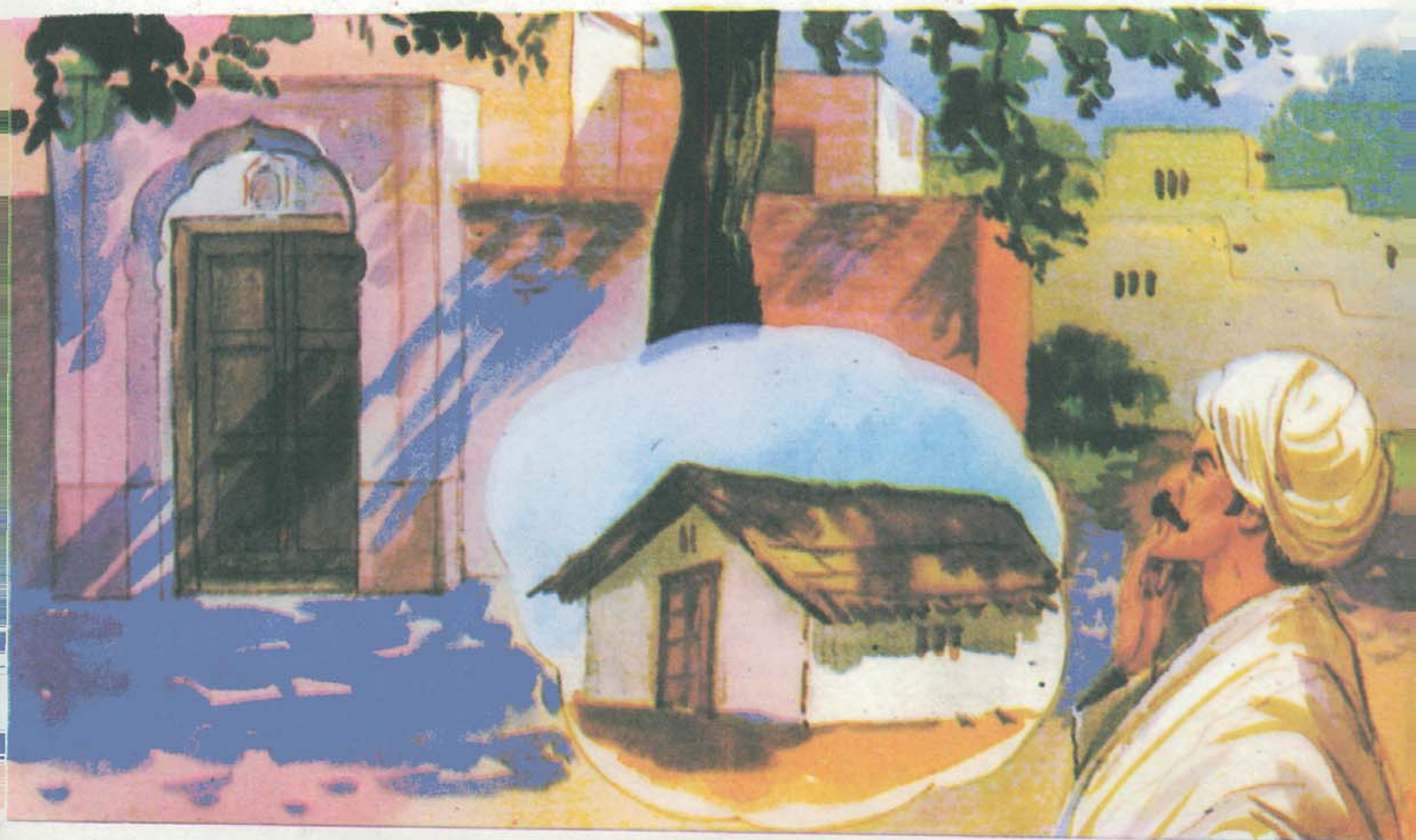
गुरु नानक बटाला गए

गुरु जी अपने ससुराल बटाला पहुँचे जहाँ उनकी पत्नी व दोनो पुत्र माता नानकी के देहान्त के बाद रह रहे थे। मेहता कालू ने उन्हें अपने साथ चलने को कहा था परन्तु माता सुलखनी के पिता ने उन्हें एसा नहीं करने दिया। नगर के बाहर चौधरी अजीता रंधावा के कुएँ पर गुरु जी ने अपना डेरा जमाया और वहाँ कीर्तन शुरु कर दिया

सब और बात फैल गई कि मूले चोणे का दामाद साधु बनकर आ गया है और खेतों में कुएँ पर डेरे डाल लिए हैं। मूला खत्री बहुत क्रुद्ध हुआ और अजित रंधावे के साथ कुएँ पर आया। उसने बहुत गुस्सा किया पर अजित रंधावा कीर्तन सुनकर बहुत प्रभावित हुआ और श्रद्धालु हो गया। मूले खत्री ने गुरु साहिब को घर चलने को कहा परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। मूला घर गया, भोजन तैयार करवाया और नए कपड़े ले कर वापिस आ गया। गुरु जी ने न खाना खाया और न ही कपड़े

बदले। मुँह से भी कुछ न बोले। इतने में उनके दोनों पुत्र भी वहाँ गए और प्रणाम करके संगत में बैठ गए।

अगले दिन मूलेशाह, उसकी पत्नी व बीबी सुलखनी भी वहाँ आ गए। वे गुस्से में बोलते जा रहे थे जब अजित रंधावे ने उन्हें रोका और कहा कि यह तो भगवान का रुप हैं। इन की रज़ा में राजी रहो, सुखी रहोगे। मूलेशाह ने कहा कि वह अब उनके परिवार का खर्चा और बर्दाश्त नहीं कर सकते। रंधावा ने कहा कि खर्चा

मैं दे दिया करुँगा। कई दिनों के बाद मूलेशाह और उनकी पत्नी को समझ आई। उन्होने अपने बोले कुशब्दों के लिए क्षमा माँगी। गुरु जी ने उन पर अपनी कृपा दृष्टि डाली और खुशी प्रदान की। अजित रंधावा गुरु जी की सेवा करता बड़ा महान महात्मा बन गया।

सुमेर पर्वत पर गोष्ठी

तीसरी उदासी में गुरु जी उत्तरी भारत में हिमालय तक गए। वह कश्मीर, लद्दाख, तिब्बत होते हुए मानसरोवर झील तक गए। इन क्षेत्रों के तपस्वियों, योगियों और सिद्धों को जीवन ज्ञान दिया। सिद्ध गोष्ठी में इन विचारों का सार है। गुरु नानक देव ने उनको समझाया कि आप मानवता व समाज की भलाई के लिए कुछ नहीं कर रहे। जिस गृहस्थ आश्रम को त्याग कर आप यहाँ तप कर रहे हो उन्हीं गृहस्थियों से आप अपनी ज़रुरतें पूरी करवाते हो। असली तपस्वी वही है जो प्रभु का नाम याद रखे और दूसरे संसारी जीवों को जीवन ज्ञान दे, उनका उद्धार करें। गुरु नानक के साथ इस वार्तालाप के बाद बहुत से योगी सिख बन गए।

गुरु नानक मक्का पहुँचे

गुरु नानक देव जी की चौथी उदासी पश्चिम की और थी जिसके दौरान सबसे पहले वे कराची पहुँचे। वहाँ एक भारतीय मुसलमान फकीर से वार्तालाप हुआ और उसके बाद आप मक्के पहुँच गए। वहाँ पंजाब से बहुत सारे मुसलमान पीर फकीर आए हुए थे। इनमें एक जीवन नामक व्यक्ति भी था। सुबह सवेरे जब वह सफाई करने के लिए आया तो उसने देखा कि गुरु जी महराब की और पैर किए सोए हुए हैं। यह एक बहुत बड़ी बेअदबी थी।

जीवन ने उन्हें पैर मारा और कहा "कौन है तू जो भगवान के घर की ओर पैर करके सो रहा है?" गुरु जी ने उसे उत्तर दिया "भाई तू गुस्से न हो जिधर ईश्वर का घर नहीं है उस तरफ मेरे पैर कर दे।" जीवन ने उनके पैर दूसरी ओर घुमाए तो गुरु जी ने पूछा "इस तरफ ईश्वर का घर नहीं है" इस प्रकार जीवन को यह ज्ञान दिया कि ईश्वर सब और है। उसका निरादर तब होता है जब हम उसके बताए रास्ते पर नहीं चलते।

कई जन्म साखियों में बताते हैं कि इस समय मक्का घूम गया था। इस घटना की महत्तता यह है कि गुरु जी ने यह समझा दिया कि ईश्वर सब तरफ है। जीवन व अन्य मुसलमानों को असली मुसलमान बनने का उपदेश दे कर गुरु जी वापस अपने देश की ओर चल दिए।
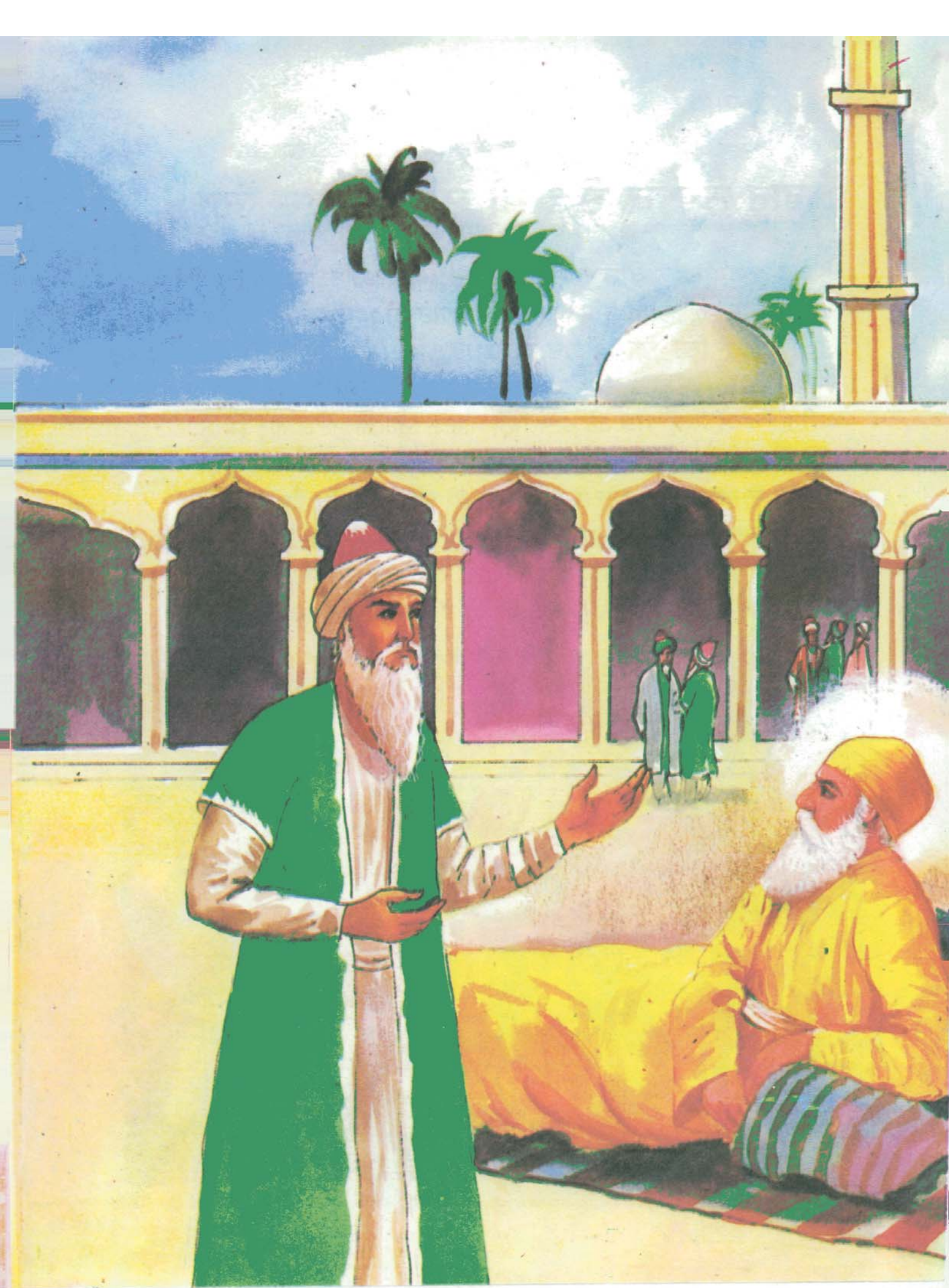
गुरु नानक की बगदाद यात्रा

मक्के से गुरु नानक बगदाद पहुँचे। यहाँ पीर दसतगीर रहते थे जिनके कई हिन्दुस्तानी-मुसलमान शिष्य थे। गुरु जी ने इस सूफी फकीर के डेरे के पास आसन लगाया और कीर्तन करने लगे। एक पीर ने तो चुगली सुन के गुरु जी को पत्थर मार-मार के मारने का हुक्म दे दिया। अब क्या था? लोग पत्थर उठा-उठा कर गुरु जी के पास पहुँचें गए। वे यह भी भूल गए कि नमाज़ का समय हो गया है। काज़ी बाँग देनी भूल गए। गुरु जी पहले तो बिल्कुल शाँत रहे फिर उन्होंने खड़े होकर मुसलमानों की तरह ही बाँग देनी शुरू की। आखिर में उन्होंने पंजाबी में कहा "गुरु वर अकाल सति श्री अकाल" मारने आए लोग भूल गए कि वे किसलिए आए थे। गुरु नानक ने पीर से बातचीत शुरू की और कहा "बाँग में जो भाव हैं
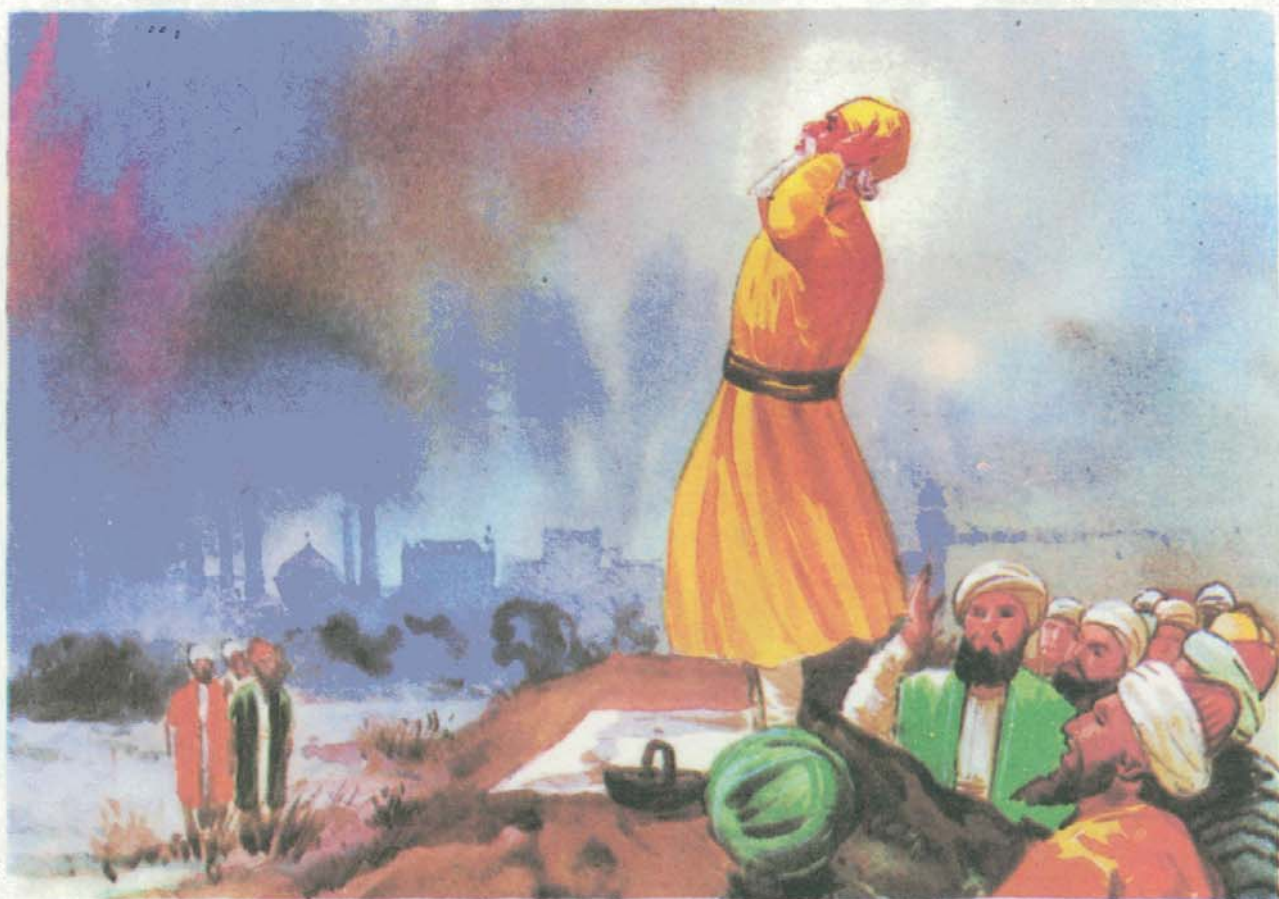
उसमें मेरा पूरा विश्वास है" गुरु साहिब ने ईश्वर, मनुष्य और उसके कर्मों के बारे में विचार प्रगट किए। पीर को मानना पड़ा कि गुरु जी कोई पहुँचे हुए पीर फकीर हैं। गुरु जी और मरदाने को वह पीर अपने डेरे पर ले गया और काफी दिन अपने पास रखा और जिन्दगी का असली ज्ञान प्राप्त किया। मुस्लिम धर्म में गीत संगीत, राग की मनाही है। गुरु जी ने इस गलत धारणा को इस ढंग से बदला कि सारे मान गए। गुरु नानक ने कहा "राग वह सीढ़ी है जो धरती से आसमान तक ले जाती है। राग वह नाव है जो शब्द की संकरी नदी से बेखुदी के समुद्र में ले जाती है।"

बग़दाद में उनकी इस यात्रा का लिखित वर्णन है। उसमें गुरु नानक की फकीर बलौल से बातचीत का भी जिक्र है। वह चबूतरा भी मौजूद है जिस पर गुरु नानक जी बैठे थे।

फिर गुरु नानक कंधार आए

कंधार अफगानिस्तान का वह नगर है जिसे सिकंदर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने के समय बनाया था। तब यह नगर किले के रूप में था। गुरु नानक देव बगदाद से वापिस आते हुए यहाँ ठहरे। एक घर के आगे जा कर खड़े हो गए। अंदर से एक मुगल निकला और गुरु जी से नाम और देश पूछा। बस फिर क्या, गुरु जी के उत्तर से ऐसा प्रभावित हुआ कि ईश्वर और उसकी कृपा के बारे में चर्चा शुरू कर दी।

इस मुगल का नाम यारवली था। वह ईश्वर का बड़ा भक्त था और उसे ईश्वर के दर्शन की बड़ी लालसा थी। यारवली गुरु नानक देव जी से कहने लगा "आपके दर्शन से मुझे खुदा के दर्शन हुए हैं मुझे शिष्य बना लीजिए" उसने गुरु जी को अपने घर में रखा। गुरु जी की निकटता से उसके जीवन में संतोष आया। वह वाहिगुरू के नाम का जाप करने लगा।

इसी तरह कंधार ही में उन्होंने एक क्षत्रिय को असली स्नान की महतत्ता बताई और सिमरन के स्नान की ओर ले आए। यह क्षत्रिय भी गुरु जी का भक्त बन गया। कंधार ही में एक और व्यक्ति था शाह शरफ पठान। यह दक्षिण भारत का वासी था और काफी समय से कंधार में रह रहा था। इसकी मन की शंकाओं को भी गुरुं नानक देव जी ने दूर किया। कंधार में बहुत से पठान व मुग़ल गुरु जी के सिक्ख बन गए। गुरु नानक ने किसी को भी धर्म बदलने को नहीं कहा। उन्होंने समझाया कि उनका मानवता का मार्ग है और हर धर्म का इन्सान उस पर चल सकता है।
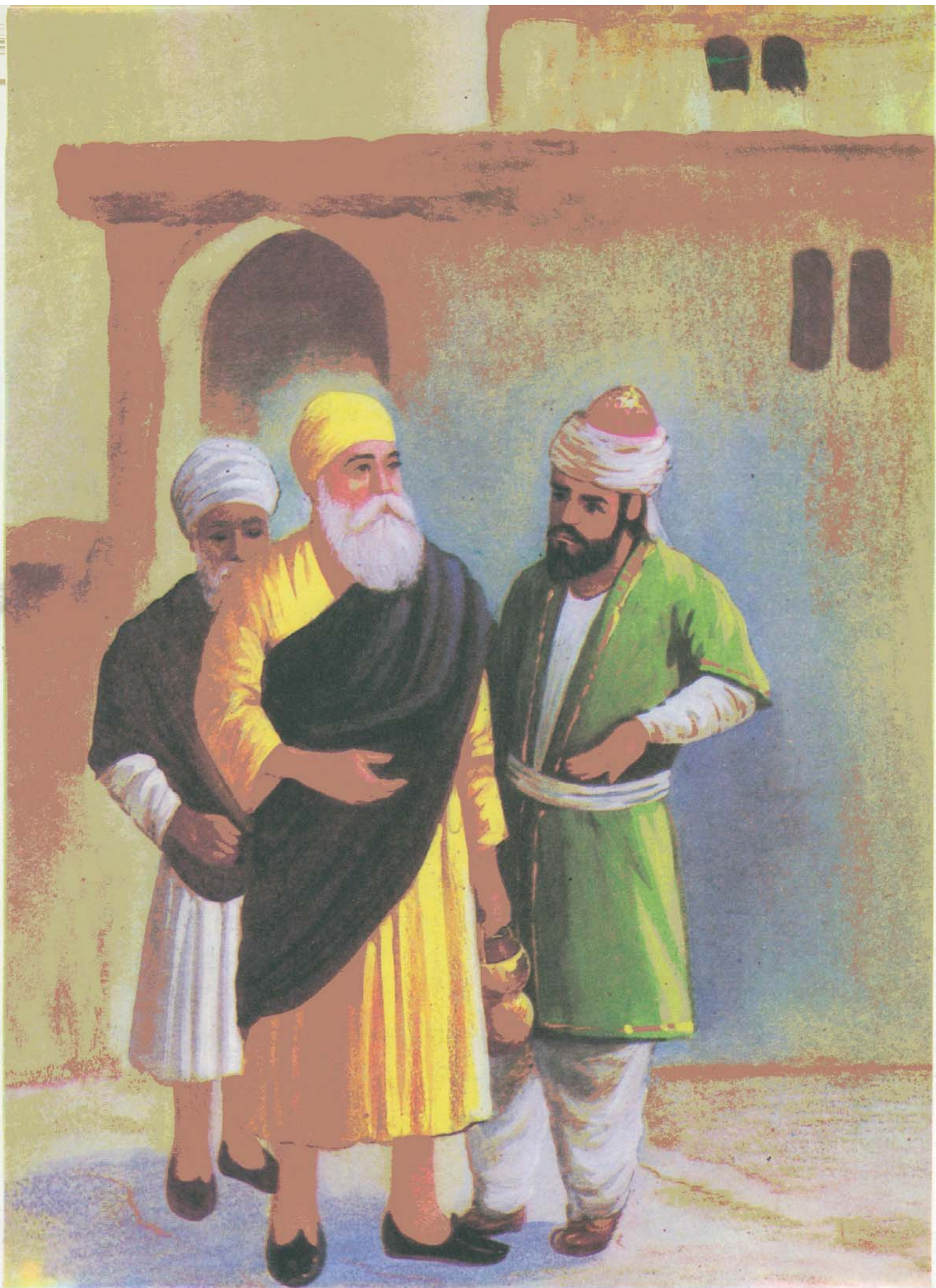
वली कंधारी का अहंकार तोड़ा

मक्का, मदीना, रूस, ईरान, अफगानिस्तान और पेशावर होते हुए गुरु नानक हसन अब्दाल पहुँचे। एक पहाड़ी पर अहंकारी फकीर वली कंधारी रहता था। इस इलाके में पानी का एक ही चश्मा था जो कि उस पहाड़ी पर था। गुरु नानक देव उस पहाड़ी की गोद में एक पेड़ के नीचे बैठ गए और कीर्तन शुरू कर दिया। लोग खिंचे हुए आने लगे। यह बात वली कंधारी बर्दाशत न कर पाया।

गुरु जी ने मरदाने को पानी लाने के लिए पहाड़ी के ऊपर भेजा। वली कंधारी ने पानी देने से इन्कार कर दिया और यह भी कहा कि अगर तेरा गुरु असली गुरु है तो ईश्वर से पानी माँग ले। जब मरदाने ने यह बात गुरु जी को आकर बताई तो उन्होंने पास पड़े एक पत्थर को हटाया। अरे यह क्या? एक पानी का झरना वहाँ से फूट पड़ा। यह झरना आज भी कायम है। ऊपर वली कंधारी का चश्मा थोड़ी देर ही में सूख गया। यह आज तक सूखा हुआ है।

वली कंधारी को बहुत गुस्सा आया। उसने एक बहुत बड़ा पत्थर ऊपर से गिराया ताकि गुरु नानक और मरदाना उसके नीचे दब कर मर जाएँ। मरदाना घबरा गया परन्तु गुरु नानक ने वाहिगुरु बोल कर अपने हाथ से न केवल वह पत्थर रोका अपितु उस पत्थर पर उनके हाथ के पंजे का निशान भी गड़ गया। लोगों ने वह पत्थर संभाल लिया और चश्में के ऊपर गड़वा दिया।

बाद में यहाँ पर एक खूबसूरत गुरुद्वारा बनाया गया जो पंजा साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
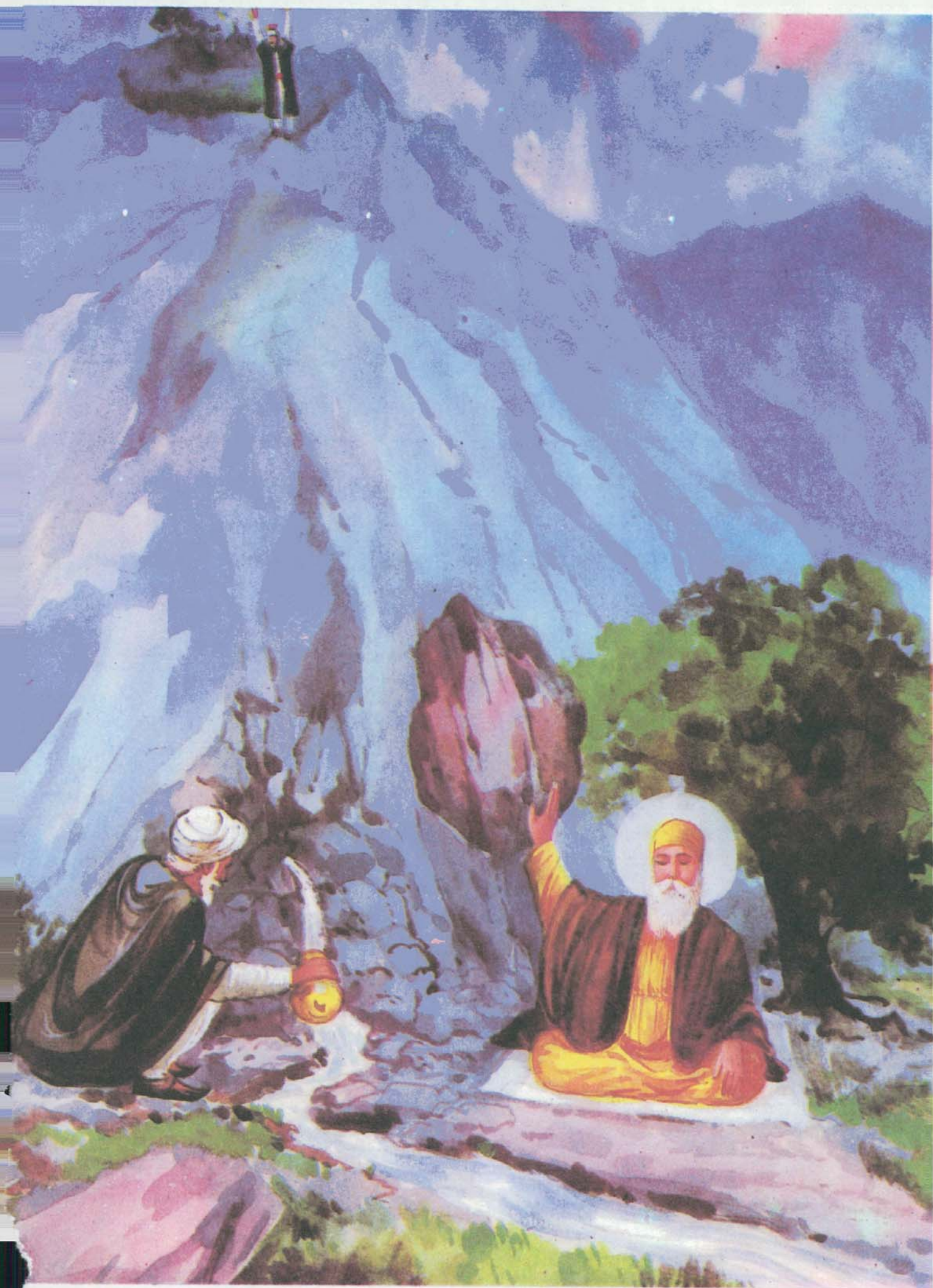
बाबर का हमला और गुरु नानक

१५२१ई. में गुरु नानक देव अमीनाबाद वापिस आए और भाई लालो से मिले। गुरु जी यहीं पर थे जब बाबर ने हमला बोल दिया। उसने अमीनाबाद को तहस-नहस कर दिया। शासकों और आम जनता पर बहुत जुल्म किए। कत्ले-आम में बहुत से लोग मारे गए। हजारों लोग कैदी बन गए। जन-साधारण के साथ गुरु नानक और मरदाने को भी बन्दी बना लिया गया। मरदाने को एक घोड़ा पकड़ने को हुक्म दिया गया और गुरु नानक देव जी को सामान की गठरी पकड़ा दी गई।

गुरु जी ने मरदाने से घोड़ा छोड़कर कीर्तन करने को कहा। जनरल मीर खान ने देखा कि गठरी गुरु के सिर से एक इन्च ऊपर है और घोड़ा आप ही मरदाने के पीछे-पीछे चल रहा है। कैदखाने में गुरु नानक और मरदाने को बाकी कैदियों की तरह आटा पीसने के काम पर लगा दिया गया। इन दोनों की चक्कियाँ अपने आप चलती देख कर मीर खान दौड़ता हुआ बाबर के पास गया और इस कौतुक के बारे में बताया। बाबर खुद चल कर कैदखाने आया और यह देख कर गुरु नानक से माफी माँगी। उसने कहा "आपको कैद कर के मैने बहुत बड़ी भूल की है मुझे माफ कर दो। आपको रिहा किया जाता है। मैं आपको कुछ भेंट करना चाहता हूँ उसे कबूल करें" गुरु जी ने कहा "यह सारे निर्दोष हैं इन्हें रिहा कर दो। लोगों की आशीष लेनी चाहिए उनको दुखी कर के उनकी बद्दुआएँ नहीं लेनी चाहिएँ।"
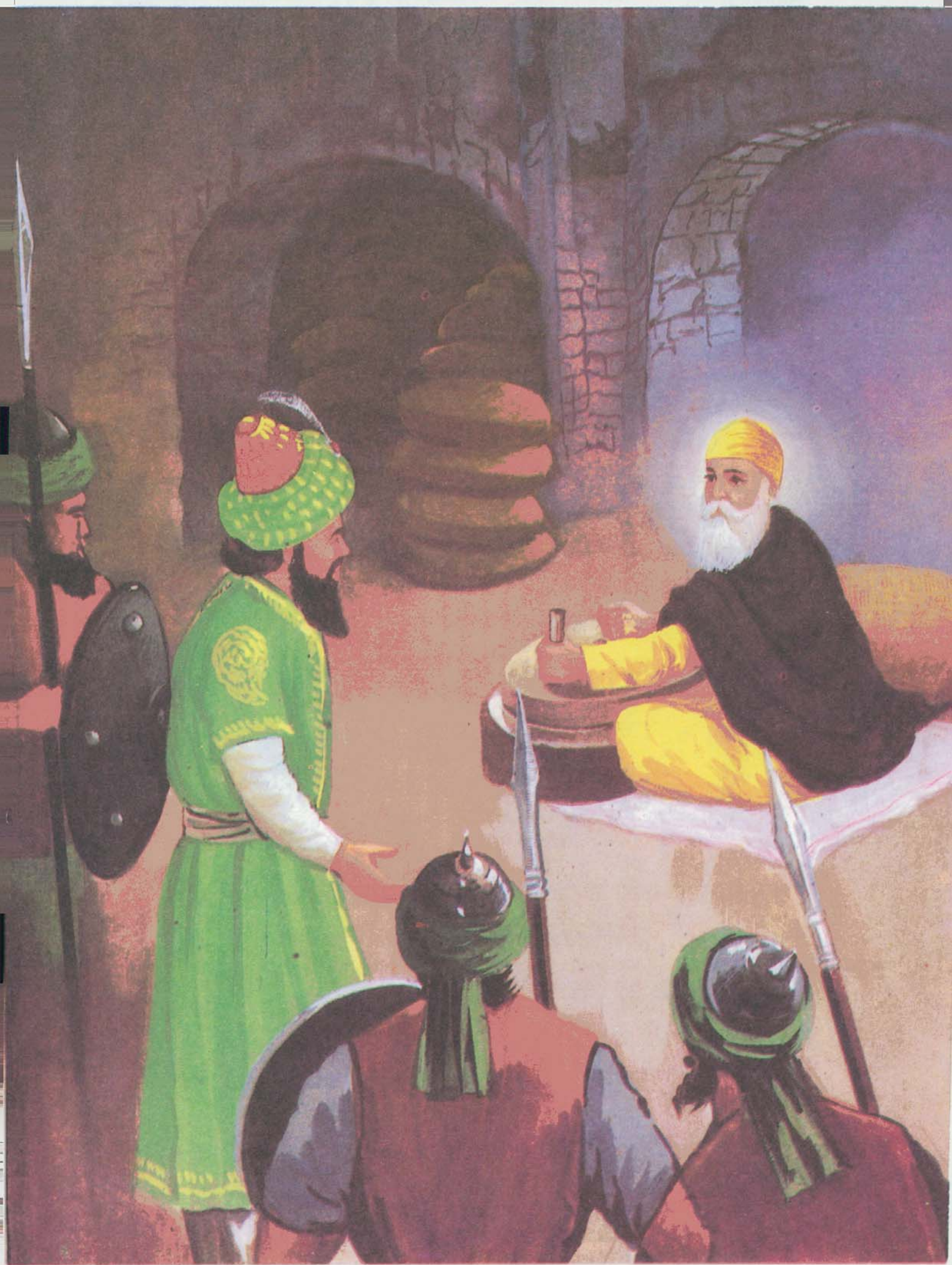
गुरु जी की बातों से बाबर बहुत प्रभावित हुआ। उसने सारे कैदी छोड़ दिए और अमीनाबाद में हर तरह का जुल्म बन्द कर दिया। दूसरा काम यह हुआ कि लूटा हुआ सारा माल वापिस किया गया। सारे देश में गुरु नानक के नाम की धूम मच गई। गुरु जी की "बाबर वाणी" इस समय के हालात का वर्णन है।

अचल बटाला में सिद्ध गोष्ठी

शिवरात्रि के मेले के दौरान बटाले में बहुत सारे सिद्ध योगी एकत्र होते थे। इन सिद्धों को सही राह पर डालने के लिए गुरु नानक भी करतारपुर से अचल बटाला पहुँच गए। मरदाना और अजित रंधावा भी उनके साथ थे। सारे एक पेड़ के नीचे बैठ कर कीर्तन करने लगे। लोग मेले में आने शुरू हो गए और कीर्तन सुन कर उस ओर आकर्षित होने लगे। सिद्ध गृहस्थ की निन्दा करते और लोगों को डरा, धमका कर, श्राप देने का डर देकर ठगते थे। गुरु जी का संदेश इस से उल्टा था। गुरु जी ने सब को बताया कि गृहस्थ होते हुए, सांसरिक जीवन जीते हुए भी मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

योगियों ने गुरु नानक की परीक्षा लेने के लिए एक रामधारी का लोटा छिपा दिया और कहा कि अगर नानक सर्वज्ञाता है तो उसका लोटा ढूँढ दे। गुरु जी ने वह लोटा ढूँढ निकाला। सिद्ध और क्रोधित हो गए। वे सब इकट्ठे होकर बहस करने के लिए गुरु जी के पास आए। उन्होंने सवाल किया कि आप साधू भेष धारण करने के बाद वापिस इस सांसारिक जीवन में क्यों आए? गुरु जी ने उत्तर दिया कि आप गृहस्थियों के घर में जन्म लेकर, फिर उसे त्याग कर गृहस्थियों से ही आटा दाना माँगने क्यों जाते हैं इन लोगों के सहारे जीवन व्यतीत करते हुए भी इस गृहस्थ जीवन के विरूद्ध नफरत का प्रचार क्यों करते हैं?
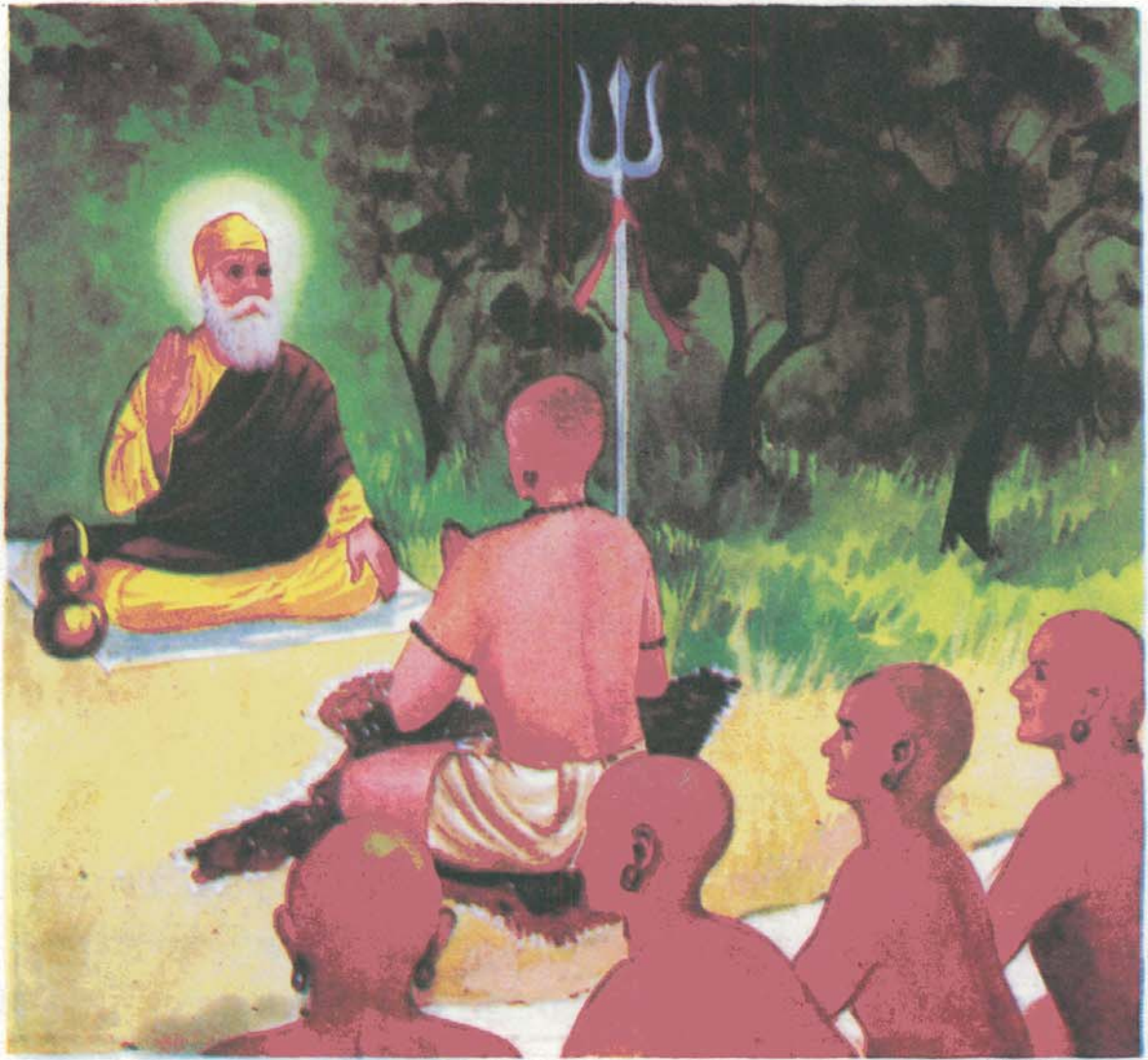
गुरु नानक की सिद्धों के साथ गोष्ठी बहुत प्रसिद्ध है। गुरु जी ने उनके हर प्रश्न का बहुत उचित उत्तर दिया। गुरु जी ने जितने भी प्रश्न पूछे सिद्ध किसी एक का भी संतोषजनक उत्तर न दे पाए। गुरु नानक ने उन्हें एहसास करवाया कि वे गलत राह पर चल रहे हैं।

गुरु नानक मुलतान में

अचल बटाले से गुरु नानक मुलतान पहुँचे। मुलतान पीरों और फकीरों का गढ़ था। जब उन सब ने गुरु नानक के आगमन का सुना तो घबरा गए। उन सब ने सलाह कर के एक तरकीब सोची। उन्होंने गुरु नानक को शहर की सरहद पर एक दूध से भरा कटोरा दिया जिस का भाव था कि मुलतान पीरों फकीरों से भरा पड़ा है। गुरु जी ने चमेली का फूल कटोरे के ऊपर रख दिया। भाव यह कि जिस तरह यह फूल दूध के कटोरे में समा गया है उसी तरह वह पीरों फकीरों से भरे मुलतान में समा सकते हैं।

यहाँ भी गुरु जी ने पीरों फकीरों को पाखंड और झूठ की राह छोड़ने की प्रेरणा दी।

लहना जी करतारपुर आए

लहना जी काफी समय से खडूर में रह रहे थे। हर वर्ष देवी यात्रा को जाते परन्तु मन को शांति व संतोष नहीं मिल रहा था। एक दिन वाणी सुनकर और गुरु नानक देव जी का ठिकाना पता कर उनके दर्शन के लिए जाने का सोचा। जब सब देवी यात्रा को जा रहे थे लहना जी उन्हें रोक कर करतारपुर आ गए।

लहना जी के प्रेम की शक्ति ही थी जो गुरु नानक देव उठकर उनसे मिलने बाहर गली में आ गए। लहना जी ने उन्हीं से गुरु नानक का पता पूछा। गुरु जी ने उन्हें अपने पीछे आने को कहा। जब धर्मसाल के पास पहुँचे तो गुरु जी दूसरे द्वार से अन्दर चले गए। लहना जी अन्दर पहुँचे और आकर माथा टेका। ऐसा सकून और शान्ति मिली कि सिर उठाने का दिल ही न हुआ। जब देखा कि गुरु जी तो आप मुझे लेने आए थे तो क्षमा याचना की कि मैं तो घोड़े पर बैठा आया और गुरु जी पैदल ही साथ चलते रहे।

इस पहले मिलन से ही वह यहीं के हो कर रह गए। साथियों को देवी दर्शन को भेज दिया और आप करतारपुर में ही रहने लगे। काफी दिनों बाद गुरु जी ने आदेश दिया कि अपने परिवार के पास खडूर जाओ। वे इन्तज़ार कर रहे हैं उनके प्रति अपना फर्ज पूरा करो। लहना जी खडूर आ गए पर हर समय ध्यान करतारपुर में ही रहता। परिवार के सुख आराम का प्रबंध कर के घर में जो पहाड़ी नमक काफी मात्रा में पड़ा था लंगर के लिए लेकर करतारपुर की ओर चल दिए। लोगों ने कहा कि घोड़ा ले जाओ ताकि नमक ले जाने में आसानी हो। पर लहना जी ने कहा "मुझे अपने सिर पर उठा कर ले जाने में आनन्द आता है।" करतारपुर पहुँच कर नमक माता सुलक्खनी को दे दिया।

गुरु नानक देव जी उस समय खेतों में थे लहना जी झटपट खेतों में जा पहुँचे। धान के खेतों में गुरु जी व और सिक्ख घास निकाल रहे थे। लहना जी ने भी साथ काम शुरू कर दिया। जो घास निकाला उसे लहना जी ने एक गठरी में बाँध कर

अपने सिर पर उठा लिया। वह गीला घास उन्हें पानी और मिट्टी से भिगोता रहा। लहना जी ने घर आ कर वह घास मवेशियों को डाल दिया। माता सुलक्खनी ने

गुरु जी से कहा - "यह आदमी बड़ी दूर से नमक की बोरी उठा कर लाया था फिर आपने इस से गीली घास का गट्ठर उठवा दिया। आपने यह ख्याल भी नहीं किया कि इसके कपड़े गन्दे हो जाएँगे।" गुरु जी ने मुस्कुरा कर कहा - यह घास का गट्ठर नहीं था। यह तो दीन दुनिया का छत्र था। यह कीचड़ नहीं कपड़ों पर केसर पड़ा है।

पहली मुलाकात के वक्त भी गुरु नानक ने कुछ भावपूर्ण शब्द कहे थे। जब गुरु जी ने मिलने पर नाम पूछा और लहिना जी ने नाम बताया तो उन्होंने कहा था- तू लहना और हमने तुम्हारा देना। न तब किसी ने उनके शब्दों का अर्थ समझा था और न ही अब। लहिना जी ने कई वर्षों तक पूर्ण प्रेम भाव से सेवा की। प्रभु का सिमरन किया। क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पूरी तरह खत्म कर दिया।

गुरु नानक देव ने कई परीक्षाएँ ली। एक बार उन्होंने एक पेड़ को झंझोड़ कर लंगर के लिए राशन लाने का आदेश दिया। दोनों पुत्रों ने अनहोनी बात समझ कर मना कर दिया पर लहिना जी एकदम चले गए। इस तरह के और कई अनहोने से काम करने को कहा। लहिना जी हर परीक्षा में खरे उतरे।

आखिर एक दिन अपनी संसार यात्रा संपूर्ण होते देख कर गुरु जी ने सारे परिवार और सिक्खों को एकत्र किया। लहिना जी को अपने आसन पर बैठाया, पाँच पैसे और नारियल भेंट कर के नमस्कार किया और बाबा बुढ्ढा जी से कहा कि लहिना जी को तिलक लगाएँ। वह आज से गुरु अंगद जी हो गए हैं।

गुरु नानक देव जी ने अपनी वाणी रचना की पोथी भी गुरु अंगद जी को दे दी।

गुरु नानक का प्रभु से मिलाप

गुरु नानक देव जी एक पेड़ के नीचे जा कर लेट गए। माता जी, पुत्र और संगत ने रोना शुरू किया तो गुरु जी ने उनसे कीर्तन करने को कहा। कीर्तन शुरू हुआ तो गुरु जी ने वाहिगुरू कहके सिर के ऊपर तक चादर ले ली और संसार से चले गए।

इतिहास कहता है कि इस समय हिन्दु व मुसलमान झगड़ने लगे। गुरु जी के समय में भी अंतिम संस्कार की बात छिड़ी थी। तब गुरु जी ने कहा था कि मेरे दोनों तरफ फूल रख देना। जिस तरफ के फूल खिले रहें उनका अपने-अपने विश्वास के अनुसार संस्कार कर दें। फूल रखे गए परन्तु दूसरे दिन क्या देखते हैं कि दोनों तरफ के फूल खिले हुए हैं। भाव यह था कि गुरु नानक दोनों धर्मों का सांझा है।
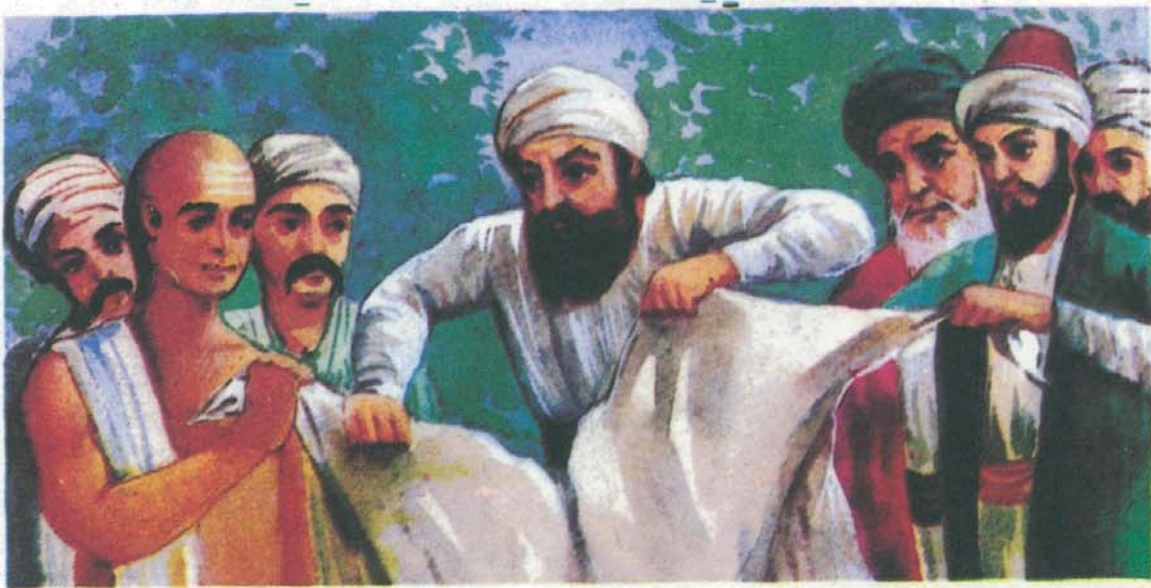
एक और बात प्रसिद्ध है कि जब चादर उठाई गई तो शरीर वहाँ नहीं था। वह चादर आधी- आधी फाड़ ली गई। हिन्दुओं ने उसका संस्कार कर दिया और मुसलमानों ने उसे दफन कर दिया। यह दोनों स्थान करतारपुर में अभी तक मौजूद हैं।